आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंधसंपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी -413 522 (महा.)
ईमेल- aryavidyavanshi@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी -
विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल- editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्यसंपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद ◆ ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
अमर हबीब ◆ पांडुरंग नाडकर्णी ◆ मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य

छायाचित्र : स्थानीय फोटोग्राफर

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में ...

संपादकीय 05
श्रद्धांजलि - शांति सैनिक 07
आन्तर भारती - 1 - तुका म्हणे 08
आन्तर भारती - 2 - महात्मा बसवेश्वर वचन ...09
आन्तर भारती - 3 - तिरुवल्लुवर वाणी 10
धुनी तरुणाई - नई संस्कृति की खोज 11
समाचार भारती - 1 - एन.सुहास 14
विशेष आलेख - 1 - गोपालकृष्ण गांधीजी.......15
चिंतन भारती - 1 - जाति में से 19
समाचार भारती - 2 - गोइन्का 23
विशेष आलेख - 2 - जन आंदोलन 24
समाचार भारती - 2 - बालमेला 25
विशेष आलेख - 3 - नाविक क्यों 27
काव्य भारती - दृष्टिकोण 30
समाचार भारती - 4 - अहवाल 31
विशेष आलेख - 4 - शहीद भगतसिंह 33

मॅगेसेस पुरस्कार प्राप्त जोहड बाबा राजेन्द्र सिंहजी राणा को जागतिक स्तर पर मान्य

स्टॉक होम वॉटर ॲवार्ड

प्राप्ति पर आन्तर भारती परिवार की ओरसे अभिनंदन
जल पुरुष माने जाने वाले श्री राणा के जल संबंधी सामाजिक कार्य के लिए यह पुरस्कार दिया गया है।

–माध्यम साधन व्यक्ति
डॉ.अनिकेत लोहिया

संपादकीय...

हम भारतीय हैं !

''हम भारतीय हैं !'' – इस घोषणा में गौरव और गर्व है, मगर किसी प्रकार की संकुचित भावना नहीं है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'विश्व मानव' की विशिष्ट परिकल्पनाएँ दुनिया को भारत की देन हैं। 'हम भारतीय' होने की घोषणा में मानवता की अनूठी सेवा की निष्ठा है, अपनत्व, ममत्व, आत्मीयता, असीम शक्ति तथा विश्व मानवता के प्रति अचंचल एवं अडिग विश्वास भी हैं। इस अपनत्व, ममत्व और आत्मीयता की विराटता इस बात में निहित है कि भारतीय चिंतन की दृष्टि वैश्विक है, सेवा की दृष्टि समूचे ब्रह्मांड तक की है (जिसमें केवल भूमंडल ही नहीं है, सारा आकाश और समूचे तत्व शामिल हैं)।

कोई भी व्यक्ति जिस भौगोलिक दायरे में रहता है वहाँ वह प्रत्यक्ष सेवाएँ दे पाता है, उसकी सेवा की चेतना और ऊर्जा का लाभ, परोक्ष सेवाएँ, दूरदृष्टि और वैचारिक विशिष्टता का प्रभाव समूचे भूमंडल तक फैला सकता है। यह भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है। 'हम भारतीय हैं !' वह सांस्कृतिक अनुगूंज है, जिसकी आत्मा में सेवा की अनूठी निष्ठा, प्रेम का असीम भंडार, ज्ञान की विकासमान परंपरा, विवेक की व्यापकता, संयम, त्याग और न्याय की धर्मबद्ध व्यावहारिकता है।

'आंतर भारती' का अर्थ ही हृदय की वाणी से है, यह समूचे भारत के, समूचे संसार के, समूची मानवता के हृदय की वाणी है। 'आंतर भारती' के स्वप्न–द्रष्टा साने गुरुजी ने भारतीयता और भारतीय संस्कृति को परिभाषित करने के प्रयासों में अर्थ की इसी विराटता का दर्शन एक ही वाक्य में करा दिया है। उन्होंने कहा था– 'भारतीय संस्कृति का अर्थ है कर्म, ज्ञान, भक्ति की जीती–जागती महिमा–शरीर, बुद्धि और हृदय को सतत सेवा में लीन करने की महिमा।' यह वाक्य उन्होंने अपनी अनूठी कृति 'भारतीय संस्कृति' की प्रस्तावना में आज से लगभग आठ दशक पूर्व लिखा था। 'भारतीय संस्कृति' लिखने का उनका उद्देश्य भी प्रस्तावना में स्पष्ट था – 'यह पुस्तक एक साधारण मनुष्यों के लिए लिखी गई है।' साने गुरुजी अपने वाणी को हर इन्सान तक पहुँचाना चाहते थे और मानवता की मंगल कामना की इस वाणी की आवाज़ जिस हृदय तक पहुँचे, वह धन्य होने की, आत्मीय घोषणा उन्होंने की थी। उसी अवसर पर उन्होंने कहा था – 'मेरी उत्कट इच्छा है कि भारतीय संस्कृति निर्दोष बने, प्रगति करे और तेजस्वी बने। भारतीय संस्कृति का अर्थ है– सर्वांगीण विकास, सबका विकास/सबका विकास सबके प्रति अनिश्छल प्रेम से ही संभव है। प्रेम और सेवा की दृष्टि हर प्रयास में सफलता दिलाने में सक्षम है।'

आज समाज में द्वेष, कपट, अनीति के बढते कदमों को देखकर हमें चिंतित होने की जरूरत नहीं है। सबसे पहले हमें यही चाहिए कि संकुचित तथाकथित धर्म की जगह एक सामान्य, सेवापूर्ण, कर्मपूर्ण भारतीय धर्म का प्रचलन हो। आपसी भेदभाव को भढ़कानेवाले तत्वों, प्रयासों को नकारने की बड़ी जरूरत है। इसका आधार भी प्रेम, त्याग, आत्मीयता और कर्मठता हो। दुनिया के सामने हम इन्हीं आदर्शो के साथ 'विश्व गुरु' की भूमिका निभाते हुए सच्ची विश्व संस्कृति की संकल्पना को साकार बनाने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

मानवीयता की प्रतिष्ठा ही मानव समाज के सार्थक एवं तार्किक अस्तित्व के लिए

जरूरी संकल्पना है। इस संकल्पना का सफल रूप में फलीभूत होने की दिशा में हमें परंपरागत मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध होने की जरूरत है। आत्मीय भावनाओं के साथ सेवा करने दृष्टि भारत की समूची जनता में फैल जाए। जन प्रतिनिधि, अधिकारी वर्ग और अन्य सभी सेवानिष्ठ व्यक्ति आत्मीय भावनाओं के साथ आगे बढने की दिशा में हम 'भारतीय धर्म' को फैलाएँ, तथाकथित संप्रदायों को हम 'धर्म' की संज्ञा दे चुके हैं, जो संकुचित बनकर, ठेकेदारों के हाथ में बिगडकर, मानवीयता की रक्षा को भूलकर, महज आडंबर बनकर पनम रहे हैं। इनके गुण यदि कोई बचे हैं, उन सबका मिल–जुला रूप ही विराट भारतीय संस्कृति है। उसकी रक्षा के सरोकार मानवीयता की रक्षा के लिए हो, अन्य कोई संकुचित संप्रदायों के पनपने के लिए नहीं।

मानव सेवा निष्ठा, भूमंडल के हित की 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना की प्रतिष्ठाकी आज बड़ी जरूरत है। इस जरूरत को पूरी करने की ताकत सही मायने में 'हम भारतीय हैं!' की घोषणा में है। भारत की विराट संस्कृति की अनुगूंज हम सब के हृदय तक पहुँचे और हमें संकल्पबद्ध बनाए। तब हमारी यह घोषणा सार्थक लगेगी कि 'हम भारतीय हैं'

डॉ.सी.जय शंकर बाबु

आंतर भारती (मासिक)

फॉर्म ४

(नियम ८ देखिये)

१. प्रकाशन स्थान	औराद शहाजानी - ४१३ ५२२
२. प्रकाशन अवधि	मासिक
३. मुद्रक का नाम	सदाविजय आर्य
नागरिकत्व	भारतीय
पता	औराद शहाजानी - ४१३ ५२२
४. प्रकाशक का नाम	सदाविजय आर्य
नागरिकत्व	भारतीय
पता	औराद शहाजानी - ४१३ ५२२
५. संपादक का नाम	सदाविजय आर्य
नागरिकत्व	भारतीय
पता	औराद शहाजानी - ४१३ ५२२
६. उस व्यक्ति/संस्था के नाम जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के प्रतिशत से अधिक साझेदार या हिस्सेदार हो	आंतर भारती ट्रस्ट

मै सदाविजय आर्य एतद्धारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

- सदाविजय आर्य

प्रकाशक

गांधी विचारक नारायण देसाई का निधन

श्रद्धांजलि

स्व.नारायणभाई देसाई का [illegible] संपूर्ण क्रांति विद्यालय, वेडछी जिला सूरत में दिनांक 15-3-2015 को निधन हुआ है। इनका जन्म गुजरात के वलसाड में 24 दिसम्बर - 1924 में हुआ था। उनके पिता महादेवभाई देसाई महात्मा गांधीजी के निजी सचिव थे। इसलिए नारायणभाई को गांधीजी के साथ साबरमती आश्रम, अहमदाबाद और सेवाग्राम, वर्धा में 20 सालतक रहने का मौका मिला। उन्हें शाला का शिक्षण औपचारिक नहीं करना था। [illegible]

संपूर्ण क्रांति विद्यालय की स्थापना उन्होंने [illegible] उन्होंने करीब 50 किताबें [illegible]

[illegible] 2004 में [illegible]

[illegible] 118 [illegible]

[illegible]

[illegible]

मो.8141973341

प्रार्थना

निर्वैर व्हावें सर्वभूतांसवें

निर्वैर व्हावें सर्वभूतांसवें । साधन बरवें हें चि एक ॥ ध्रु ॥
[illegible] नारायणा । बडबड [illegible] ॥१॥
[illegible] ॥२॥
तुका म्हणे [illegible] ॥३॥

English Translation

Befriending all living beings is the best path
Nirvaira whaave sarva bhootassaven

The best path to salvation is to befriend all living beings.
Lord Narayana1 will not accept a devotee who only babbles without following the right path.

The Lord accepts those devotees who treat their own kin as well as others
On a level platform and are ever waiting to serve others.
Says TUKA, once the mind is crystal clear,
His penance will sublimate the devotee.

1.Lord Narayana-Lord Vithala

English : D.S.VAJRAM
3, Praram Lakaki Rasta, Pune - 411 016

आंतर भारती - 2

महात्मा बसवेश्वर वचन

-डॉ.इरेश स्वामी

कन्नड वचन

संसारवेंबुदु गाळिय सोडरु
सिरियेंबुदोंदु संतेय मंदि कंडय्य
इदनेच्चि केडबेड सिरियेंबुद
मरेयदे पूजिसु कूडल संगमदेवन

हिन्दी काव्यानुवाद

संसार, तूफान का दिया है
धनदौलत बाजार में मिले लोगों की तरह है भाई
धन को सच मान, बिगड़ो मत
बिना भूले कूड़ल संगम की आराधना करो

सारांश :
महात्मा बसवेश्वर ने संसार की असारता को, क्षणभंगुरता को इस वचन में बताया है । तूफान में दिया अधिक समय तक टिक नहीं सकता, बुझ जाता है । वैसे ही मनुष्य जीवन क्षणिक है । कबीर ने संसार कागज की पुड़िया कहकर, झाड़ औ झांखड कहकर उसे भ्रममूलक बताया है । धन दौलत, बाजार में मिले लोगों की तरह अनचाहे तथा अस्थायी बताया है । इसे पाकर भ्रमित मत होना क्योंकि यह सत्य नहीं है । सत्य ईश्वर है उसे बिना भूले याद करो उसकी पूजा करो । प्रायः मनुष्य उसे विस्मृत कर भ्रममूलक धन को सच मानकर उसके पीछे पागल हो जाता है ।
संतों शरणों दासों ने अपनी वाणी से सदैव सतर्क रहने को कहा है ।

'विद्या' 12 ब्रह्मचैतन्य नगर, सोलापूर- 413 004
0217-2342194, 9371099500

आंतर भारती - 3

धारावाहिक - 38

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल-संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हायकु अनुवाद - डॉ.सी.जय शंकर बाबु
प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्लरवियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्याय 8. अन्बुडैमै (प्रेमभाव)

अन्बुट्र अमर्न्द वळक्केन्ब वैयहत्तु
इन्बुट्रार् ऍय्दुम् चिरप्पु। (कुरल - 75)
जीवनाधार
प्रेम हो, सर्वत्र ही
सुखमय हो ।

भावार्थ - प्रेममय, स्नेहमय जीवन को इहलोक व परलोक में भी सुख मिलता है, यह निश्चय है ।

अऱत्तिऱ्के अन्बु चारबेन्ब अरियार्
मरत्तिरकुम अहदे तुणै । (कुरल - 76)
प्रेम रक्षक
है धर्म का; नाशक
है अधर्म का ।

भावार्थ - मूर्ख ही ऐसा मानते हैंकि केवल प्रेम शिष्ट रक्षक (धर्म रक्षक) ही है, मगर उन्हें पता होना चाहिए कि वह तो अशिष्ट नाशक (अधर्म नाशक) भी है ।

नयी संस्कृति की खोज करनेवाली प्रयोगशाला

-अमर हबीब

मैं राष्ट्रीय संयोजक था, उस दरम्यान वाहिनी का राष्ट्रीय अधिवेशन बिहार के मुजफ्फरपुर में हुआ था। पटना से वहाँ जाने के लिए नदी पर कोई पुल नहीं था । अतः नौकाओं से यात्रा करनी पड़ती थी। जे.पी.जी ने वाहिनी के कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा के लिए निश्चित समय दिया था। पूरे देश से आये हुए सैंकडों प्रतिनिधि एक दिन पूर्व जे.पी.से मिले थे। प्रश्नोत्तर हुए। वह अपूर्व कार्यक्रम था।

हम तुरन्त मुजफ्फरपुर गए। उस दरम्यान वाहिनी के संविधान को आकार दिया जा रहा था। मैं उसको अन्तिम रूप देने के लिए बैठा। रात्तजगा हुआ । प्रचंड मथ्थापच्ची की। आज अगर किसीने संविधान का विषय छेड़ा तो शरीर पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस काम में बहुत समय और शक्ति बर्बाद हुई ऐसा लगता है। रातभर जगा हुआ था। सुबह भी चर्चा शुरू ही थी। इतने में पानी भरनेवाला एक व्यक्ति आया। उसके कंधे पर कलसा था। गर्दन झुकी हुई थी। उसने हमें लक्ष करके कहा, 'पता है?' जे.पी.गुजर गए । 'शुरू में विश्वास नहीं हुआ। रेडिओ शुरू किया। उसपर शोक संगीत बज रहा था। बीच में ही समाचार आ रहे थे। भरोसा हुआ तो हमने संविधान पर हो रही चर्चा रोकी और सीधे गंगाघाट पहुँचे। जहाज से पटना पहुँचे। तबतक जे.पी.पार्थिव शरीर श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में दर्शन के लिए रखा गया था। भारी भीड़ थी। चीटियों जैसे आदमी ही आदमी। वाहिनी के सारे कार्यकर्ताओं को एकत्र किया गया और कतारें बनायीं। जे.पी.अन्त्यसंस्कार राजकीय सम्मान के साथ और वैदिक पद्धति से हुआ। वास्तव में इन दोनों पद्धतियों का जे.पी.ने विरोध किया था। मणिमाला के अगुवाई में तुरन्त एक पत्रक निकाला गया। उसका शीर्षक था 'जे.पी.के अंत्येष्टी में ब्राह्मण क्यों?' अन्त्ययात्रा समाप्त हुई । लोग लौट रहे थे तब वे पत्रक बांटे गए । सभी ओर यही चर्चा थी। कुछ लोग हमने उठाये प्रश्न का स्वागत कर रहे थे, लेकिन काफी कुछ नाक भौं सिकुड रहे थे।

मुझे जे.पी. के जाने का दुख था लेकिन ऐसा नहीं लगा कि मैं अनाथ हो गया हूँ। उलटा तीव्र अनुभूति हुई कि अब मुझे अधिक कार्यक्षमता से, अधिक दायित्व निभाते हुए काम करना होगा । जे.पी.की मृत्यु के बाद मेरे काम की गति और व्याप्ति बढ़ गयी थी।

मेरे संयोजक होने के दरम्यान दो बड़े आंदोलन हुए। बोधगया का भूमि

आंदोलन और मराठवाडा में विद्यापीठ नामांतर आंदोलन। इन दोनों आंदोलनों में पूरे देश से वाहिनी के कार्यकर्ता किसी न किसी रूप में सहभागी हुए थे। आंदोलनों में जैसा मनुष्य का असली रूप सामने आता है, उसी तरह उसकी क्षमता से भी परिचय होता है। क्षमता का विकास भी होता है। मैं बोधगया आंदोलन में शामिल हुआ था। गया जिले के बोधगया परिसर में सैकड़ों कृषकों की जमीनें उनसे छिनकर मठ के नाम कर दी गयी थीं। जिनकी जमीनें छिनी गयी थीं वे अधिकतर दलित थे। उन्हें जमीनें लौटायी जाएं इसके लिए ये आंदोलन था। 'कारू' नाम का हमारा एक सहयोगी, उस क्षेत्र के पीड़ित लोगों का नेता था। यह आंदोलन कई वर्षों तक चला। एक मोर्चे में मैं भी शामिल हुआ था। मोर्चा आगे सरक रहा था, इतने में एक विस्फोट की आवाज आयी। मोर्चे में शामिल लोग इधर उधर भागने लगे। उनमें से जो हाथ लगे उन्हें पकड़कर पुलिस ने उन्हीं पर गुनाह थोप दिया। इन लोगों को छुड़ाने के लिए पटना की कांचन सामने आयी। मैं उसके साथ कोर्ट गया था। वकील से मुलाकात हुई(कोर्ट के आहाते में, कंचन पर गड़ी हुई भूखीं नज़रें आज भी मुझे जैसी की वैसी दिखती हैं। लेकिन वह घबरायी नहीं। अपने निरपराध साथियों को छुड़ाने डटी रही। परिवर्तन के संघर्ष में अपना सब कुछ कुर्बान करने का अर्थ क्या होता है, इसको दिखानेवाले कई उदाहरण मुझे बिहार में देखने मिले। उसको दिखानेवाले कई उदाहरण मुझे बिहार में देखने मिलें। जे.पी.गये, उसके कुछ दिन पहले एस.एम.जोशी वहाँ आये थे। मैं जे.पी.जी.से मिला। बोधगया की भूमि पर सत्याग्रह की रूपरेखा उन्हें बतायी। मुझे ऐसा लग रहा था कि देश के जाने-माने लोगों ने वहां आकर अगर सत्याग्रह किया, तो पूरे देश का ध्यान इस प्रश्न की ओर खींचा जाएगा और उसका समाधान जल्दी हो सकेगा। जे.पी.ने इस विषय पर एस.एम.जोशी जी से चर्चा करने कहा। मैंने उनसे बात की। उन्होंने कहाँ, 'पहले मैं उस क्षेत्र में जाकर आता हूँ' जाबिर हुसैन उस समय मंत्री थे। उन्होंने वाहन की व्यवस्था की। मुझे मुज़फ्फरपुर लौटना था इस कारण मैं जोशी जी के साथ नहीं जा सकता था। नरेंद्र नाम के हमारे एक सहयोगी को उनके साथ भेजा। वे बोधगया में थे तभी उन्हें भी जे.पी. की मृत्यु का समाचार मिला था। वे तुरन्त लौट आये थे। जे.पी.की.अन्त्ययात्रा में मैंने उन्हें देखा था। यह व्यक्ति कितने साफ ह्रदय का है, कितना रहमदिल है, यह मैंने फिर एक बार उस समय देखा।

हमने 'बोधगया से नाताकोष' नाम का कोष स्थापित किया था। अमोल पालेकर, निळू फुले जैसी चित्रपट सृष्टि की हस्तियों से, हम निधि एकत्र करते थे। यह निधिआंदोलन के काम आती था। वाहिनी के दिनों में मैं खूब घूमता था। इस भ्रमन्ति के खर्च का काफी बड़ा हिस्सा मेरी भावी पत्नी आशा उठाती थी। उस समय भी वह नौकरी करती थी। मुंबई के चंद्रशेखर जैसे कुछ दोस्त बीच-बीच में सहायता करते थे। कई बार मैं

जहा पहुँचता था, वहां के कार्यकर्ता मुझे आगे की यात्रा का टिकट निकालकर देते थे। वाहिनी का कार्यालय पटना में था। शुरू में कलानन्द मणी कार्यालय संभालता था। बाद में अशोक (झुमरीतलैय्या) ने यह दायित्व निभाया। चंदा निधि वहीं एकत्र होता था। जयप्रकाश अमृत कोष से कुछ रकम मिलती थी । हिसाब की दृष्टि से हम सभी बड़े कर्मठ थे। एक पैसा भी इधर-उधर न हो, इसका हर कोई ध्यान रखता था। महाराष्ट्र का कार्यालय जलगांव में था। शेखर के घर का पीछे का कमरा वाहिनी के अधिकार में था। सार्वजनिक पैसा कितने उत्तरदायित्व से संभालना चाहिए, इसके पाठ मुझे वाहिनी में ही सीखने मिले। इस दरम्यान हुआ उत्तरदायित्व का भान मेरे आगे के जीवन की पूंजी बना।

लातूर जिले में औराद शहाजानी नामक कस्बे के महाविद्यालय में छात्रों का आंदोलन शुरू हुआ। वहां एक शिविर के आयोजन की निश्चिती हुई। उस निमित्त मैं वहां गया था। शिविर तीन दिन का था। वहां देविदास पवार से परिचय हुआ। उसके पिताजी का देहान्त हो चुका था। बड़ी बहन का विवाह हो गया था। छोटा भाई माँ के साथ उसका हाथ बंटाने पुस्तैनी गांव में था। माँ ने ही इन बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा किया। किसी शेरनी की तरह काम करती थी वह । उसे लगता था कि देवीदास पढे और नौकरी करे । औराद में रहा तो पढ़ाई पूरी होगी ही इसका कोई भरोसा नहीं था। मैंने उसे साथ चलने के लिए कहा, लेकर घर आया। देवीदास मेरे घर में रहा। मेरी माँ पर्दा पद्धति का कड़ाई से पालन करती थी। किसीके भी सामने नहीं आती थी। अपवाद था देवीदास महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि मैं आंदोलन में कूदा और पढ़ाई छोड दी । दूसरी ओर मैंने ही देविदास को घर इसलिए लाया कि उसकी पढ़ाई पूरी हो। शिक्षा को छोड देना यह जैसा मेरा जीवनानुभव था, उस परिस्थिति में देविदास का जीवनानुभव था। पढ़ाई पूरी करना। पढ़ाई करते-करते ही देविदास ने आंबेजोगाई में वाहिनी का काम शुरू किया। गांव-गांव में निकाली साइकिल यात्रा में मैं भी शामिल हुआ था। आंबेजोगाई में वाहिनी का एक शिविर भी हमने लिया था।

वाहिनी में सवर्ण परिवारों से आये युवा-युवतियों की संख्या अधिक थी। नामान्तर का प्रश्न सामने आया तब बिलकुल ना-नुकूर न करते हुए वाहिनी ने नामान्तर के लिए अपना समर्थन दिया। न केवल समर्थन दिया बल्कि इस आंदोलन में हम सबने अपने आपको झोंक दिया। औरंगाबाद में श्रीराम जाधव हो या औराद का देविदास पवार, जळगांव में शेखर सोनाळकर या फिर अमरावती में चंद्रकान्त वानखेडे और कही और कोई, सभी ने दिसम्बर का लाँग मार्च एक बड़ी घटना थी। इस लाँग-मार्च में हिस्सा लेने बिहार, उत्तरप्रदेश, गुजरात जैसे प्रान्तों से कार्यकर्ता खास तौर पर औरंगाबाद आये थे । उन्होंने सत्याग्रह किया और जेल भी भोगा। इस आंदोलन में मै लाठीचार्ज में जख्मी हुआ

था। बाद में मुझे और श्रीराम जाधव को नासिक कारागृह में भेजा गया था। जाति-धर्म की बेड़ियाँ काटने की स्वाभाविक प्रेरणा वाहिनी के कार्यकर्ताओं में थी । इसी कारण वे इस आंदोलन में उतरे थे। बिना किसी संकोच के उन्होंने इस आंदोलन में जी जान से हिस्सा लिया था।

जय प्रकाश जी ने संपूर्ण क्रांति की घोषणा की थी। लेकिन उसकी कोई ब्लू प्रिंट नहीं दी थी। कई लोग इस अवसर का लाभ उठाने के प्रयत्न में थे। सर्वोदयी विचारवंतों ने 'संपूर्ण क्रांति' की व्याख्या करनेवाली किताबें छापकर उनका वितरण किया। समाजवादियों ने अपने ढंग से संपूर्ण क्रांति का अर्थ निकाला। लेकिन मैं किसी भी किताब को प्रमाण नहीं मानता था। किसी किताब में उत्तर मिलनेवाला नहीं, इसका मुझे विश्वास था। स्वयं अनुभव करने के बाद चिकित्सा की जाए और फिर नया प्रयोग शुरु किया जाए, यह वाहिनी की कार्यपद्धती थी। जीवन और मानवी समाज को समझ लेने के लिए कोई भी शॉर्टकट उपलब्ध नहीं है। एक-एक सीढ़ी तैयार करना, यह उत्थापन की रीत अपरिहार्य है। वाहिनी में रहते हुए और आगे भी यह सूत्र मुझसे कभी अलग नहीं हुआ। कुछ लोगों को किंताबी परिभाषा उपयोग में लाने का शौक था। उनके साथ मेरा सुर नहीं मिला। ऐसे पुस्तकी पंडितों से चार हाथ दूर रहना मैंने पसंद किया।

(क्रमशः)

'धुनी तरुणाई'
संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब
पृष्ठ : 160, कीमत : 150 रुपये
प्रकाशक : परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई - 431517 (महा.)

अनुवादक - ज्योतिराव लढ़के
चेतस, 22, बाजीप्रभू नगर, नागपूर-440033

समाचार भारती -1

आंतर भारती गोवा के समन्वयक एन.सुहास को 'गुणीजन' पुरस्कार

क्रांतिगुरु लहुजी साळवे राष्ट्रीय प्रतिष्ठान हिमायत नगर जि.नांदेड महाराष्ट्र की संस्था ने श्री एन.सुहास को, साहित्य व सामाजिक क्षेत्र में विशेष कार्य करने के कारण, राज्यस्तरीय 'महाराष्ट्र गुणीजन' पुरस्कार से सम्मानित किया है ।

एन.सुहास जहाँ गोवा में आंतर भारती के समन्वयक हैं वहीं वे राष्ट्र सेवादल, राष्ट्रीय युवा योजना व अन्य संस्थाओं के कार्यकर्ता भी हैं,

उन्हें ऐसे सम्मानित होने पर आंतर भारती परिवार की ओर से बधाई!

गोपालकृष्ण गांधीजी का माननीय मोदीजी को खुला पत्र

प्रिय प्रधान मंत्री जी

इस पत्र के साथ मेरी बधाई भी है। जो भी मैं यह पूरी प्रामाणिकता से कह रहा हूँ, फिर भी यह मेरे लिए इतना आसान नहीं है। इसका कारण है, आज आप जहाँ पहुंचे हैं, उस पद पर आप पहुँचे, ऐसी इच्छा रखनेवालों में से मैं नहीं हूँ। आप प्रधानमंत्री होंगे, इस कल्पना से हर्षित हुए करोडों जन हैं, लेकिन उनकी संख्या इनसे अधिक है जो कल्पना के कारण बहुत ही चिंतित हैं और यह बात अन्य किसीसे अधिक, आप स्वयं जानते हैं।

जिस टेबल के पास जवाहरलाल बैठे थे, लालबहादुर शास्त्री बैठे थे और इंदिरा गांधी के आपात्काल के विरुद्ध चले उस ऐतिहासिक संघर्ष के उपरान्त एक अन्य गुजराती भाई मोरारजी देसाई बैठे थे, .वैसे ही बाद में आपके गुरु अटलबिहारी जी भी बैठे थे, वहाँ आप न हों ऐसी इच्छा रखनेवालों को भी यह सत्य स्वीकार करना पड़ रहा है कि अब आप वहाँ बैठे हैं।

आप इस उच्च पद के सम्मान योग्य है या नहीं, इस विषय में मेरे मन में जितने ही किन्तु हों, लेकिन एक वंचित समाज और परिवार से आये और भारत के पंतप्रधान बने आप जैसे व्यक्ति के प्रति मेरे मन में सम्मान है। सर्वसमभाव पर आधारित अपने संविधान के उद्दिष्ट की ही इससे पुष्टि होती है।

<u>'देश' इस संकल्पना पर पुनर्विचार</u>

लेकिन, मोदीजी, मुझे यह बताना ही होगा कि आप देश का नेतृत्व कर रहे हैं, इस बात से करोडों भारतीय क्यों चिंतित हैं। 2014 के चुनाव में मतदारों ने प्रमुखता से 'मोदी के लिए' या 'मोदी के विरुद्ध' मतदान किया है। यह बात अन्य किसी की तुलना में आप ही अधिक अच्छी तरह जानते हैं। नरेन्द्र मोदी-देश के सर्वोत्कृष्ट रक्षक-देश का रखवाला हैं या नहीं, ऐसा ही मुद्दा था। भाजप ने इतनी सीटें जीतीं क्योंकि मतदान करनेवालों में 31 प्रतिशत लोगों के मन में (आपका मतदान में हिस्सा) देश का सर्वोत्कृष्ट रक्षक ही नहीं-देश का उद्धारक इस रूप में आपने स्थान प्राप्त किया है। इसीके साथ यह भी ध्यान में लेना होगा कि 69% लोगों ने आपको 'अपना रक्षक' के तौर पर मान्य नहीं किया है। 'अपना देश' इस संकल्पना के विषय में उनमें मतभेद हैं। और श्री मोदी-'देश' इस संकल्पना के विषय में चिंतन करते समय-भारत का संविधान (जिससे मिले अधिकार केआधार पर आप प्रधानमंत्री पद तक पहुँचे हैं।) महत्त्वपूर्ण हो जाता है। 'देश' इस कल्पना के विषय में आप फिर एक बार सोंचे, ऐसा मैं आपसे तहेदिलसे निवेदन करता हूँ।

<u>बहुविधता का जतन करो</u>

एकता और स्थिरता इनका जाप करते समय आप हमेशा सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम और उनकी दृढता का उल्लेख करते हैं । आपको पता है कि कितना घटना समिति के अल्पसंख्यांक (उप) समिति का अध्यक्षपद सरदार महोदय के पास ही था। शिक्षा, संस्कृति, धर्म जैसी बातों में भारतीय संविधान, अल्पसंख्यकों को कुछ मौलिक आश्वासन देता है और उसके प्रति सरदार वल्लभभाई पटेल और उस समिति के अन्य सदस्य-विशेष रूप से राजकुमारी अमृत कौर-इनके प्रति आभारी होना चाहिए । मोदी साहब, अल्पसंख्यांकों के विषय में संविधान की दृष्टि और लक्ष्य पूरी तरह स्वीकार कीजिए। उसे बदलना अपनी सुविधानुसार स्वीकार करना, उसे शक्तिहीन करना या उनमें तोडफोड करना टालिए ।

आप जब जाहीर सभाओं में बोलते हो, तब लोगों को, वैविध्यपूर्ण भारत के सारे लोगों को साथ में ले जानेवाले एक जनतंत्रवादी नेता का भाषण सुनने की चाहत होती है, किसी सम्राट ने जारी किये फतवों को सुनने की नहीं। मोदी साहब, अल्पसंख्यकों को आश्वस्त कीजिए। उनके साथ आश्रयदाता जैसा व्यवहार मत कीजिए। विकास यह सुरक्षितता का पर्याय नहीं हो सकता। एक हाथ में कुरान और दुसरे में लॅपटॉप, ऐसा अर्थ व्यक्त करनेवाला कुछ, आप बोले थे। लेकिन आँखों के सामने यह दृश्य लाकर भी उन्हें, अधिक सुरक्षित नहीं लगता। चूँकि एक दूसरा चित्र उन्हें भयभीत करता है। हिन्दु मनुष्य का स्वांग भरनेवाले एक गुंडे का, जिसके एक हाथ में हिन्दु महाकाव्य की 'डिव्हिडी' है तो दूसरे हाथ में त्रिशूल ।

पुराने जमाने में, मुख्याध्यापक नमक के घोल में भिगायी हुई एक छड़ी-सभीको दिखेगी और डराएगी इस तरह-क्लास के एक कोने में हमेशा रखते थे । उनकी इच्छा हो तो वे किसी की भी चमडी उधेड सकते हैं, यह दिखाने के लिए । कुछ महिने पहिले हुए मुजफ्फरनगर केदंगे (जिनमें 42 मुस्लिम और 20 हिंदुओं की बलि चढ़ी और 50000 लोग बेघर हुए) यह वह नमकडुबाई छड़ी है। ध्यान में रखो, तुम्हारा भी यह हाल किया जाएगा। लेकिन करोडों लोगों तक यह इशारा पहुँच चुका है और वह रात-दिन डर पैदा कर रहा है।

वह डर दूर करना मोदी साहब, आपही के हाथ में है। उसके लिए आवश्यक अधिकार और सत्ता आपके हाथ में है और यह अपेक्षा न्याय्य तथा बंधनकारक भी है। संकुचित और असहिष्णु मशवरों पर विजय पाकर आप वह डर दूर करेंगे, ऐसा विश्वास पैदा हो सके, ऐसी मेरी इच्छा है।

. केवल मुस्लिमों के ही नहीं, तो भारत के सब धर्मीय अल्पसंख्यकों के दिलों पर जख्मों के निशान हैं। इसी तरह के पश्चिम पंजाब से विस्थापित हुए हिन्दु और सिख और काश्मिरी पंडितों के दिलों पर हैं। सच्चे-झूठै उकसावे के कारण अचानक दंगा शुरु होने का डर रहता है और फिर प्रति-शोध के लिए उसकी अधिक भयंकर पुनरावृत्ति होने का भी । इन सबमें खासतौर पर स्त्रियों को ही लक्ष्य बनाया जाता है। दलित और आदिवासी, खास तौर पर महिलाएँ जीवन में बार-बार मानभंग और शोषण झेलती रहती हैं। अपमान, भेदभाव, बलि का बकरा बनना, इनके कारण मन की लगातार नोंचनेवाली बेचैनी, उस मनुष्य की नागरिकता, नीतिधैर्य और मनुष्य होने का गौरव ही छीन लेती है। इन नोंचनेवाली बेचैनी की ओर ध्यान दीजिए, मोदीजी, बोलने में भी और कृति करने में भी। उनका भरोसा जीतिए । यह आप कर सकेंगे-आप उनके हितों के प्रथम रक्षणकर्ता हैं, इस विषय में उन्हें आश्वस्त करें ।

बहुविधतापूर्ण प्रजासत्ताक में संबोधन देते समय एक सांचे में बद्ध भाषा बोलने का, अनेकविधता के सम्मुख पक्षपातपूर्ण शब्द उपयोग में लाने का, वैविध्य में खुलनेवाली सद्भिरूचि के सामने अधिनायकवादी व्याकरण का उच्चार करने की उद्धतता कोई न करें। भारत यह एक विविधता से अलंकृत अरण्य है। इस विविधता का पोषण करनेवाली यहाँ की उपजाऊ मिट्टी को आप संभालिए। वहां एकरंगी, एकल संस्कृति का राजकीय एकेश्वरवाद मत लाईए।

कलम 370 से संबंधित भूमिका, समान नागरी कानून की मांग, अयोध्या में राम मंदिर, उत्तर तथा वायव्य दिशा से आये हिन्दु निर्वासित उसी तरह पूर्व और नैऋत्य दिशा से आये मुस्लिम निर्वासित इनके विषय में आप के नाम पर मिडिया द्वारा उधृत किये गये विधान, ये सब सुननेवाले के दिल में डर पैदा करते हैं, विश्वास नहीं। मोदी साहब, जनता के दिल में उभरा डर, प्रजासत्ताक का गुण नहीं हो सकता।

भारत के अल्पसंख्यांक, ये भारत का एक टुकडा या अलग हिस्सा नहीं हैं। वे मुख्य धारा में घुलमिल गए हुए हैं। उन्हें अलग करने का प्रयत्न करने से क्या साध्य होनेवाला है। मोदी साहब 'भारत माता की जय' यह मान्य है ही, लेकिन नेताजी सुभाष बाबु की 'जय हिन्द' ललकार की आवश्यकता उससे अधिक है।

आपका विजय ऐतिहासिक तो है ही। उसके बाद का आपका शासनकाल भी उतना ही ऐतिहासिक तथा दुनिया को कई आश्चर्योंद्वारा अचंभित करनेवाला होने दो। हो सकता है, वे आश्चर्य तुम्हें समर्थन देनेवालों की पसंद के न हो, लेकिन कई अन्यों को उनके प्रति आशा हो। आप काफी बुद्धिमान हो और मेरे जैसे पिछली पीढी के किसीने न मांगते हुए दी गयी लेकिन तटस्थ सलाह के प्रति आप रोष नहीं रखेंगे ऐसी आशा करता हूँ।

आपको समर्थन देनेवालों की प्रशंसा की आप अवश्य यथोचित वापसी करें, लेकिन उसीके साथ-साथ जिन्होंने आपको समर्थन नहीं दिया है, उनका भरोसा प्राप्त कर लीजिए। अल्पसंख्यांक आयोग की पुनर्रचना करते समय विरोधी पक्षों से योग्य व्यक्तियों के नाम मंगवाइए और बिना किसी बदल के उन्हें स्वीकारिए। अनुसूचित जाति और जमाति तथा भाषिक अल्पसख्यांक इनके लिए बनायी समितियों के प्रति भी वैसा ही रूख अपनाइए । आगे के प्रमुख जानकारी अधिकारी सीएजी, सीव्हिसी इनका चयन करते समय, चयन समिति के अशासकीय सदस्यों की शिफारिसें अगर पक्षपातपूर्ण न होगी उनके मतानुसार कीजिए। आप मजबूत हैं और ऐसी जोखिम उठा सकते हैं।

दक्षिण की अनुपस्थिति की ओर ध्यान

मोदी साहब, भारत की आपकी विकास गति में दक्षिण की ओर से कमी अनुभव होती है। आपके विजय की 'हिन्दी भाषा भौगोलिक क्षेत्र में' जो प्रतिमा है उसके कारण आगे उत्तर-दक्षिण में दूरी पैदा न हो। आप अपना एक उपप्रधानमंत्री दक्षिण से चुनिए। हो सकता है यह सियासी व्यक्ति न हो, लेकिन समाजशास्त्र, पर्यावरण, अर्थशास्त्र, लोकसंख्या शास्त्र इनमें से किसीका विशेषज्ञ हो। नेहरू के मंत्रिपरिषद में षण्मुखम् चेट्टी, जॉन मथाई, सी.डी.देशमुख और के एल्.राव जैसे लोग थे। वे काँग्रेसी नहीं थे, इतना ही नहीं तो सियासी व्यक्ति भी नहीं थे। इंदिरा गांधी के पास एस्.चंद्रशेखर और व्ही.के.आर.व्ही.राव थे। ऐसी एक परंपरा है और उसे अच्छी भी कहा जा सकता है, कि नामनिर्देशित सदस्यों को मंत्री न बनाया जाए। लेकिन अंततः आवश्यकता यह महत्त्वपूर्ण होती है। नामनिर्देशित सदस्य रहे नुरुल हसन हमारे सर्वोत्तम शिक्षामंत्री थे।

साम्राज्यशाही के आदर्श और अनुकरणीय उदाहरण आपको पसंद आते हैं। आपके संघर्ष में आप महाराणा प्रताप रहो, लेकिन शांतिकाल में अकबर बनों। आपके हृदय में आप भले ही सावरकर रहों, लेकिन विचारों में आंबेडकर बनो। वैसी ही आवश्यकता हो तो आपका एनडीए संघ प्रशिक्षित हिन्दुत्ववादी का रहने दो, लेकिन फिर भी जिन 69% लोगों ने आपको चुनाव नहीं किया, उनके लिए हिन्दुस्तान के वजीर-ए-आजम बने रहो।

आपका सहनागरिक
गोपालकृष्ण गांधी
(भू.पू.प्रशासकऔर राजदूत 2004-09)
(प.बंगाल के राज्यपाल 2005-06)

अनुवाद
ज्योतिराव लढके
'चेतस', 22, बाजीप्रभुनगर
नागपुर-440033

चिंतन भारती - 1

जाति में से विद्वेष कम करने के लिए वारकरी आंदोलन प्रयोग में लाना होगा

अभय टिळक
संत साहित्य के साधक

वारकरी संप्रदाय की विरासत एक हजार वर्ष से चल रही है, तब भी हमारे जीवन कमाल के भ्रष्ट क्यों हैं? आर्थिक सुधार की तरह वारकरी आंदोलन में भी छोटी-मोटी सुधार और बाद में कठोर सुधार ऐसा है क्या? वारकरी आंदोलन द्वारा ज्ञानोबा से निळोबा और गाडगेबाबा से तुकडोजी महाराज तक जन्मजात अधिकार देनेवाली व्यवस्था उध्वस्त करने के लिए संघर्ष हुआ। उसका परिणाम स्वरूप समता वाली घटना अस्तित्व में आई। वह लिखित स्वरूप में आई। अब आगे जाकर जाति जाति में विद्वेष कम करने के लिए यह आंदोलन प्रयोग में लाना होगा। वारकरी आंदोलन की लड़ाई मूल में जाति के कारण के लिए थी।

वारकरी आंदोलन में समता, प्रेम त्याग, सहनशीलता, लड़कपन आंदि मूल्य हैं। हमने वे सब बातें स्वीकारी नहीं। उसमें से कर्मकांड स्वीकारना आसान है। उतना ही स्वीकारा है। इस आंदोलन की नीतितंत्र तथा आत्म शुद्धि की है। वारकरी आंदोलन यह विचार है, हथियार नहीं। परन्तु अब तक हम वह हथियार जैसा प्रयोग करते रहे इस प्रगल्भ विरासत स्वीकार करने की अपनी इच्छा है क्या, यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। इस आंदोलन में योगदान कैसे दे सकते हैं। इसकी शुरूआत अपने से ही शुरू करनी होगी, उसके लिए केवल सुविधाजन इतना ही संतविचार लेने से काम नहीं चलेगा। मूलतः अपने किसी को संतोंको स्वीकार करना नहीं लगता....

वारकरी आंदोलन आगे न बढने का दोष अगली पीढ़ी का...

-डॉ.सदानंद मोरे
संतसाहित्य के गहरे साधक

महाराष्ट्र के सामाजिक समता के आंदोलन का इतिहास बताते समय 'वारकरी संप्रदाय' यह संदर्भ बिन्दु है। अपने काल की अलग-अलग मर्यादाओं का सामना करते हुए वारकरियों को वारकरी आंदोलन के नेता जहाँ तक साथ थे वहाँ तक गई। वह अब और आगे ले जाने को तैयार न हो तो उनका दोष है। आंदोलन का नहीं।

सामाजिक वास्तविकता का महत्त्वपूर्ण हिस्सा जाती व्यवस्था, वर्ण भेद,

वर्ण भेद, लिंग भेद में सब बातें विषमता को जन्म देती हैं। यहाँ की जातिव्यवस्था ही अर्थव्यवस्था है। प्रत्येक जाति विशेष व्यवसाय करने वाला सामाजिक समूह है। इस व्यवस्था को धर्म ने मान्यता दी। कई बार केवल धर्म ने दी हुई मान्यता काफी नहीं होती। फिर एकाधा व्यक्ति अपनी उसकी जाति छोड़कर दूसरा कुछ करने का 'विक्रम' करने लगे, तो उसे रोकने का काम राज्यकर्ताओं का है। ऐसा उल्लेख सर्व स्मृति के कायदे में हैं इतनी दृढ बनी हुई व्यवस्था बदलना आसान नहीं। भगवान बुद्ध से वारकरी संतों तक सबने 'अमुक व्यवसाय करता है इसलिए वह श्रेष्ठ या कनिष्ठ' इसपर ही प्रहार किया है। वारकरी यहीं की समाजवास्तव का भाग होने से वास्तव टाल कर कितना आगे जाना इसकी मर्यादा थी। मर्यादा संतों के विचारों की नहीं। वह तो सांप्रदायिकों की थी। कारण वे मनुष्य है पर जब संत विचारों की क्रियान्विती संप्रदाय से ठीक नहीं होतो वह यहाँ के नए इंग्रजी सीखे हुए जानकारों के ध्यान में आया तब उन्होंने संप्रदाय बाजू में रखकर संतों के विचार आत्मसात किए।

वारकरी (नियमित रूप से पंढरपुर की यात्रा करने वाला विट्ठल भक्त) और सामाजिक वास्तव
विट्ठल की विशेष पूजा बांधने का अधिकार मुख्यमंत्री को किसने दिया?

भारत पाटणकर
श्रमिक मुक्ति दल के ज्येष्ठ नेता

जिसे हम आज वारकरी संत परंपरा का काल कहते हैं। उसकी नींव संत नामदेव ने डाली। वह काल समाप्त होने पर भी वारकरी आंदोलन चालू रहा। इसलिए शुरू से सोलहवीं सत्रहवी शताब्दी तक का वारकरी आंदोलन, वारकरी संत परंपरा का वारकरी आंदोलन, उसके बाद महात्मा फुले के काल तक का वारकरी आंदोलन और स्वतंत्रता के बाद के काल का वारकरी आंदोलन ऐसा चार भागों में विचार करना पड़ेगा।

समाज को जाति व्यवस्था और कर्मकांड से कसकर बांधने का उस कालखंड में लोगों को आत्मविश्वास दिलाने का काम संतोंने किया। शांतता के मार्ग से संघर्ष करने की यह परंपरा थी। लाखों लोग सामुदायिक प्रयत्नों से आज भी तीर्थयात्रा को पैदल जाते हैं। विठ्ठल को मुख्यमंत्री जैसा कोई भी मन्नत मांगता नहीं, यह इस परंपरा की आज टिकी हुई अच्छी बात है, ये देवता श्रमिकों में से ही निर्माण हुए और उन्होंने ही इसे आगे बढाया। तो भी साने गुरुजी ने बेमुद्दत उपोषण करने तक अस्पृश्यों को मंदिर में प्रवेश मिलता नहीं था। वारकरी संप्रदाय में यह कब आया? काठी, कंबल और दहीभात का मिश्रण ही पहिचान वाले विठ्ठल को रेशमी वस्त्र पहिनाना, यह किसने कहा? मुख्यमंत्री और उपमंत्री ने विठ्ठल की विशेष पूजा बांधने का अधिकार किसने दिया? वारकरी

आंदोलन के मूल जो बातें नहीं थी उन्हें घुसाने का प्रयत्न शुरु है । पुजारी भी ऐसे ही घुसाई हुई बात है । अब इस संप्रदाय में राजकारण घुस गया है और वारकरियों के गट तैयार करके स्वयं की ‘लॉबी’ स्थापित करने का प्रयत्न शुरू हुआ है । परन्तु वारकरी इन प्रयत्नों का पराभव किए बिना रहेंगे नहीं ।

यह श्राप मिटे बिना देश महासत्ता होगा नहीं ।

डॉ.रावसाहेब कसबे
ज्येष्ठ विचारक

‘समता’ और ‘समरसता’ ये दो अलग संकल्पना हैं । इसलिए उसका व्यवहारिक लौकिक अर्थ निकालना कठिन है । भारतीय संविधान ने प्रौढ़ मताधिकार स्वीकारा है । यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पहले से दर्द है । उनकी हितसंबंधी पहले की सत्ता गई । सामान्य मनुष्य के हाथ में मतपत्रिका आई । प्राचीन हिन्दु राष्ट्र के पुनर्जीवन, एक हिन्दु राष्ट्र, एक धर्म हिन्दु धर्म, एक संस्कृति, हिन्दुसंस्कृति और एक राज्य, अखंड भारत यह संघ ने तयार किए हुए संघ के ध्येय है । संघ के लोग शब्द छल करने में होशियार हैं ,एक तरफ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहना और दूसरी तरफ प्रादेशिक राष्ट्रवाद कहना इसलिए ये दो शब्द ठीक से समझने चाहिए ।

समता यह स्वतंत्रता और बंधुता के बीच की बात है । समता का सादा अर्थ है । वह आधुनिक पश्चिम के प्रबोधन में से आया है । प्रत्येक मनुष्य की छिपी शक्तियों को प्रगटीकरण का अवसर मिले ऐसी रचना निर्माण करना अर्थात समानता । समता यह अधिकार है । समरसता यह अन्त है । कठोर, सनातनी हिंदुत्व यह देश को मिला हुआ बड़ा श्राप है, इसलिए इस देश का इतिहास पराभव का इतिहास रहा है । वह मिटे बिना यह देश महासत्ता होना संभव नहीं, जागतिकीकरण ने एक नया जग, नया मनुष्य, नई आधुनिक मानवीय संस्कृति निर्माण की है । जाति की, धर्म की कूपमंडूक कृति समाप्त करने के लिए जागतिकरण बहुत बडे अस्त्र हैं । जागतिकीकरण की अंतिम सीढ़ी मनुष्यों के जागतिकीकरण होगी ऐसे समय में धर्म, राष्ट्र, जाति आदि कूप मंडूक विचार छोड़ देने चाहिए, राम कहानी के पीछे न लगते हुए भविष्य का ठीक विचार करें । भविष्य का विचार करते समय वर्तमान व भूतकाल ठीक समझ लें । वर्तमान काल को प्रकाश में भूतकाल समज लें तो ही भूतकाल समझेंगे, भूतकाल के प्रकाश में वर्तमान समझें।

संविधान के मूल्य स्वीकार करने होंगे

डॉ.बाबा आढाव
परिश्रमियों के आंदोलन के ज्येष्ठ नेता

आज की परिस्थिति में केवल शासन बदलना अर्थात स्वतंत्रता नहीं। वह एक मूल्य है ।

प्रश्न ऐसा है कि तुम खुलेपन से मूल्य मानते है कि नहीं? या वे टालने का प्रयत्न शुरू है ? धर्म निरपेक्षतायह मूल्य है । यह तुम मानेंगे या नहीं? स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, लोकशाही, समाजवाद यह जीवन मूल्य समझकर उन्हें स्वीकार करेंगे या नहीं ? और जिन्होंने मूल्य स्वीकार किए हैं उनकी तरफ यह ‘‘देख लेंगे’’ ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं। ये आदमी सही अर्थ में सुसंस्कृत हैं क्या ?

सिर्फ गोलमोल बोल ने से समाज के कदम आगे नहीं बढेंगे भारत में स्त्री वर्ग आगे आ रहा हैं। तो बलात्कार बढ़ गए हैं । दलित वर्ग आगे आ रहा है तो उनपर आक्रमण होते है । यह उत्तर है क्या ?ऐसे भारत का कुछ विचार करना है कि नहीं? इसलिए भारतीय संविधान के मनोगत का आदर करना चाहिए वे जीवन मूल्य कहकर मानने चाहिए मूल्य संविधान में हैं । हम ऐसे मूल्य ही अंगीकारते नहीं । इसलिए वे उन्हें स्वीकार करने में उलझन निर्माण मत करो । समता की समरसता का एक गणित की तरह से उत्तर नहीं दे सकते । आज समाज में विषमता भयानक बढ गई हैं । बढती हुई विषमता के बारे में क्या ? भ्रष्टाचार के बारे में क्या ? लोकतंत्र पद्धति का भारत कहकर जग में अपनी अलग पहिचान निर्माण करनी है तो राज्यघटना के मूल्य मानने ही पडेंगे और उन्हें अमल में लाने होंगे ।

समता की समरसता

समरसता यह संकल्पना समता टालने के लिए नहीं लाई गई

भिकाजी इदाते
सामाजिक समरसता मंच के प्रमुख

इस देश को, यहाँ की परंपरा को हजारों वर्षों के संदर्भ हैं और वे ध्यान में लेकर कुछ बातों को प्रस्तुत करना पड़ेगा, कुछ शब्द रचना कम पड़ेगी । हजारो जाति, अनेक प्रान्त, पंथ, विषमता, ऊंचनीच, जातीयता होने पर भी यह देश कैसे टिका है ? तो इस देश में गहराई में जो संस्कृति स्वीकृत है, समाज की धारणा करता है वह धर्म और वही अपने देश का पाया है ऐसी हमारी धारणा है । कोई भी राज्य सेक्युलर ही हों पर आज जो हिन्दुविरोधी वह सेकुयलर ऐसी समझ हो गई है । इसलिए सब विचारों की तरफ समानता से देखा जाना चाहिए । ऐसा हम कहते हैं ।

समता टालने के लिए हमने ‘समरसता’ यह संकल्पना लाई नहीं। उस शब्द को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का विरोध नहीं है । संघ समता को मूल्य मानता है । जो समता उत्पन्न होगी वह टिकाने के लिए समरसता चाहिए समानता, समता यह बुद्धि की भाषा है तो समरसता यह हृदय की भाषा है । इस देश का जो मूल हिन्दु समाज है । वही संघटित नहीं । इसलिए गुलामी आई यह समझकर इस समाज को संघटित करने के लिए

संघ की स्थापना हुई । जातिपाति, प्रान्त, भाषा यह भेद न मानते हुए 'मैं हिन्दु हूँ' यह भाव उत्पन्न करने के काम हम करते हैं । यह एकात्मता की भावना अर्थात समरसता की भूमिका समरसता यह विषय पूरे समाज को बाहों मे लेनेवाला, वंचितों को न्याय देने वाला है । जो खराब है वह दूर करने के लिए समरसता मंच का प्रयत्न शुरू है । उसके लिए देशभर में कार्यक्रम आंदोलन शुरू हैं और वंचितों को, उपेक्षितों को न्याय दिलवाया जा रहा है ।

'समरसता' यह शब्द राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पास से आया है और उन्हीं द्वारा उसका आग्रह किया जाता है । परिवर्तन के आंदोलन में हम पंचसूत्र रचते हैं। संवाद, प्रबोधन, संघर्ष संगठन और रचना इस पद्धति से काम चलता है , असंगठित कार्यकर्ताओं का आंदोलन ऐसा ही खड़ा है ।

समाचार भारती - 2

गोइन्का हिन्दी-तेलुगु अनुवाद पुरस्कार की घोषणा

कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा स्थापित वरिष्ठ तेलुगु भाषी हिन्दी साहित्यकारों के सम्मानार्थ घोषित इकतीस हजार रुपये का 'गीतादेवी गोइन्का हिन्दी-तेलुगु अनुवाद पुरस्कार' 2015 डॉ.आर.सुमनलता जी को प्रख्यात समाजशास्त्री पुरुषोत्तम अग्रवाल की विख्यात कबीर-कथा 'अकथ कहानी प्रेम की' की उनके द्वारा अनुसृजित तेलुगु कृति तथा उनके द्वारा हिन्दी व तेलुगु साहित्य के प्रति किये गये समग्र योगदान के लिए दिया जायेगा ।

तेलंगाना व आंध्रप्रदेश के हिन्दी साहित्यकारों के लिए घोषित 'भाभीश्री रमादेवी गोइन्का हिन्दी साहित्य सम्मान' से गणमान्य वरिष्ठ साहित्यकार सुवास कुमार जी (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय) को सम्मानित किया जायेगा। हैदराबाद के कर्मठ हिन्दी साहित्यकार व पत्रकार श्री दिवाकर पांडेय जी को 'श्री मुनींद्र पत्रकारिता सम्मान' से विभूषित किया जायेगा ।

कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री शामसुन्दर गोइन्का जी ने एक प्रेस विज्ञाप्ति द्वारा सूचित किया है कि डॉ.सुवास कुमार जी को, श्री दिवाकर पांडेय जी को तथा डॉ.आर.सुमनलता को हैदराबाद में आयोजित शनिवार 11 अप्रैल के दिन एक विशेष समारोह में सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जायेगा ।

विशेष आलेख - 2

जनआंदोलन का राष्ट्रीय समन्वय, शामिल हों !

आंदोलन के माध्यम से जनआंदोलन के राष्ट्रीय समन्वय की भूमिका व कार्यक्रम हम आप तक पहुँचाते हैं। कृषि से इन्फ्रास्ट्रक्चर तक और सेझ से शहर से गरीबों के प्रश्नों तक देशभर में चल रहे जनआंदोलन की यह एकता है। यह आंदोलन मांगते हैं सामाजिक न्याय, विस्थापन-विषमता-विनाश रोकना चाहते हैं, रास्ता ढूंढते हैं नया रास्ता आखिर के मनुष्य तक विकास की सुविधा पहुंचाने वाले पर्यायी विकास नीति का और देखते हैं स्वप्न समृद्ध, सहिष्णु, समता अधारिक नवभारत के नए जग का।

जनआंदोलन के राष्ट्रीय समन्वय की प्रक्रिया 1992 में शुरु हुई और 1996 में समन्वय ने औपचारिक रूप धारण किया, समन्वय यह समविचारी गट संघटना आंदोलन-पक्ष आदि की अपनी स्वातंत्रता कायम रखकर सिद्ध की हुई एकत्रीकरण की प्रक्रिया है। जनआंदोलनों को एक मंच पर लाते हुए राजकारण और समाजजीवन का केन्द्रस्थान जनवादी विकास प्रथा लाने के लिए और संयुक्त कृति के लिए एकजुट है । नैसर्गिक संसाधनों पर अवलंबित जनसमुदायों का उन संसाधनों पर प्रथम अधिकार अधोरेखित करते हुए विविध दायरों के समुदायों के क्षेत्रों की लड़ाइयों को समन्वय एक मंच पर ला रहा है। उसके बिना समान-व्यापक विचारधार निष्ठ रहने वाली सामाजिक संघटना और व्यक्तियों को संघटित करने का समन्वयक प्रयत्न है।

जन आंदोलन के राष्ट्रीय समन्वय का भार विविध स्तर की दलित स्त्रियां, मजदूर, आदिवासी और युवक तथा संवेदनशील बुद्धिजीवी में समान कड़ी निर्माण करने का है।

मछिंयारे, किसान-खेत मजदूर, बांध पीड़ित और विकास प्रकल्प के बली, फेरीवाले और बांधकाम मजदूर, विविध स्तरों पर असंघटित कष्ट करने वाले स्त्रियां, दलित तथा जागतिक साम्राज्यवादी शक्तियों को चुनौती देने वाली संघटना अपने अनेक साथियों के माध्यम से समन्वय ने अपनी ताकत और प्रभाव क्षेत्र निर्माण किया है।

मूलगामी परिवर्तन के लिए संघर्ष करते समय समन्वय लोकतंत्र विकास नियोजन सुयोग्य पद्धति, तंत्रज्ञान के चुनाव के पर्याय और विकास के लाभ के समन्यायी बंटवारा यथार्थ में लाने के लिए प्रयत्नशील है। रचना और शान्ततामय संघर्ष ही समन्वय के व्यापक लक्ष्य के दो महत्त्वपूर्ण अंग है। समता-सादगी-स्वावलंबन पर आधारित जीवन शैली का समन्वय का आग्रह है। 'समन्वय' की यह प्रक्रिया अधिक प्रबल और मजबूत हो इसके लिए हमें आपका साथ चाहिए। जागतिकीकरण मुक्त अर्थव्यवस्था ने चसका लगाई हुई राज्यसत्ता गरीबों की, मजदूरों की, प्रत्येक जीवनसाधन छीन कर बड़े कार्पोरेट,

कंपनियां, पूंजीपति, बिल्डर्स को बहाल कर रही है तथा यह सब बिना शोरगुल के होवे इसके लिए नियम बना रहे है। ऐसे समय में सब गरीबों, मजदूरों–शोषित वंचितों की एकता आवश्यक है। इस एकता के लिए जनआंदोलन का राष्ट्रीय समन्वय आपको आवाहन कर रहा है। इस जन आंदोलन के राष्ट्रीय समन्वय में शामिल हों।

आप अपने व्यक्तिगत/संघटनात्मक काम समन्वय से जो कर सकते हैं तथा 'समन्वय' के कार्यक्रमों मे शामिल हो सकते हैं। समन्वय में शामिल होने की प्रक्रिया अत्यन्त सरल है। आंदोलन, संघटना, संस्था तथा व्यक्ति इसमें सहभागी हो सकते हैं। इसके साथ आवेदन भर कर आप इसमें सहभागी हो सकते हैं। आवेदन के साथ सदस्यता शुल्क रू. 100/– व्यक्तिशः रू. 200/– संस्था के लिए वार्षिक भेज दें।

इसके अतिरिक्त इन सब कामों के लिए आवश्यक साधनसामग्री निधि, अपना समय, क्षमता, कौशल इसका स्वागत है। अपनी निधि 'शाश्वत विकास न्यास' इस नाम से ड्राफ्ट/चेक/मनीऑर्डर से जन आंदोलन के राष्ट्रीय समन्वय महाराष्ट्र कार्यालय, द्वारा राघव, श्री रघुराज सोसायटी, सिंहगड रास्ता पुणे 411 030 इस पते पर भेंजे। प्रतिसाद की अपेक्षा में...

जन आंदोलन का राष्ट्रीय समन्वय

हिन्दी प्रस्तुति : डॉ. मधुश्री

समाचार भारती – 2

बालमेला : भावनगर (गुजरात)

आज एक बच्चा दूसरे बच्चे को मिलता है क्या? आज अमीर बच्चा अमीर बच्चेको मिलता है और गरीब बच्चा गरीब बच्चे को मिलत हैं । आज मुस्लिम बच्चा मुस्लिम बच्चे के साथ खाता है। और आदिवासी बच्चा आदिवासी बच्चे के साथ गाता है । आज शहर का बच्चा शहर के बच्चे के साथ दौड़ता है। और देहात का बच्चा देहात के बच्चे के साथ गीरता है। मुझे लगता है कि 'कोमन मिनीमम फेक्टर' समान बच्चे का छेद हो जाता है। इस लिए मनमें सवाल उठता है कि एक बच्चा दूसरे बच्चे से कहाँ मिलता है?

एक बच्चा दूसरे बच्चे को मिले एक उद्देश्य से भावनगर(गुजरात)में दिनांक 7,8,9 फरवरी 2015 3 दिन सुंदर आयोजन हुआ जिसका विश्वग्राम, शिशुविहार, शैशव, अवेर फाऊंन्डेशन, नूतनबाल शिक्षण संघ, पेरेन्टींग फोर पीस, बलवंत पारेख विज्ञान नगरी, शिक्षण संवधन अभियान और नगर प्राथमिक शिक्षण समिति के सहयोग से बाल मेले का सुंदर आयोजन हुआ जिसमें भाग लेने गुजरात के कच्छ, सागर किनारा, आदिवासी क्षेत्र, शहरकी

स्कूल के बच्चे, स्लम्स विस्तार के बच्चे, ग्राम्य विस्तार के बच्चे और विभिन्न धर्मसमुदाय जैसे मुस्लिम, ईसाई संस्थाओके बच्चोंने मेले में हिस्सा लिया। गुजरात के विभिन्न 40 विस्तार के 5–5 बच्चे मिलकर 200 मेहमान बच्चे और 200 स्थानीय स्कूल के बच्चे और मेहमान बच्चे का परिचय हुआ और रजिस्ट्रेशन के बाद बच्चे अभिभावक के साथ अपने घर पहुंच गए। मेहमान बच्चा और साथ आए शिक्षकों की निवास और भोजन की जिम्मेदारी भावनगर के 14 स्कूल के बच्चे और उनके शिक्षकोंने ली थी। बच्चा परिवार में एक दोस्त के नाते रहें ऐसी संकल्पना थी। स्थानीय मित्रोंने ऐसी सुचारु व्यवस्था की कि तीन–चार घंटे में मेहमान बच्चे स्थानीय बच्चों के घर पहुंच गए।

दूसरे दिन उद्घाटन समारोह में सु.श्री वर्षादास आयी थीं। जो नेशनल बुक ट्रस्ट और राष्ट्रीय गांधी स्मारक संग्राहलयमें नियामक रह चुकी हैं। समारोह में सर्जन संस्थाकी बहनें झिन्नत बहन, जमना बहन, जयवंतीबहन, शेहनाझबहन और मदीना बहन पधारीथीं। जिन्होंने अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन के प्लेटफोर्म पर बच्चों के साथ और स्लम्स एरिया में काम करते पूरी जिन्दगी बितादी। उन्होंने बच्चों के साथ संवाद करके नाट्यात्मक शैलीसे मेले का उद्घाटन किया। मेहमानों को बच्चोंने टोपी पहनाई। इसके ऊपर गुब्बारा लगाकर परस्पर स्वागत किया। बालमेले में 45 स्टॉल लगाये गए थे जहाँ बच्चों को मुक्त मनसे अपने मनपसंद स्टॉलमें प्रवृत्ति करने की आझादी थी–स्टोल्समें ओरीगामी, ग्रेटींगकार्ड, कागजके खिलोने, वेशभूषा, चित्रकारी, पेपर कटींग, पपेटमेकींग, पेपरबेग, खडेझाडु बनाना, प्लायवुडसे चिडिया के घोंसले बनाना, सोलर कुकर बनाना, कुंभार के चाक पर मिट्टी के बरतन बनाना, चरखे पर कताई करना, नृत्यगीत, संगीत, कथाकथन, वाचनालय, अंधश्रद्धा निर्मूलन, ब्लडग्रुपींग, विज्ञान, संकल्प वृक्ष, रीवरक्रोसींग, वेपलींग, बालअधिकार पर जानकारी का स्टॉल, इनोवेश, तोरण, साँपसीडी, पर्यावरण जागृति और 150 देशों के राष्ट्रध्वजों का निदर्शन का स्टॉल था। बच्चोंने पहले तो हरेक स्टॉल पर हो रही प्रवृत्ति देखी और मनपसंद प्रवृत्ति में जुड गए । बच्चा अपनी बनाई चीज अपने साथ ले जा सकता था। 10–30 से 1–00 बजे तक बच्चोंने स्टॉल्स में हिस्सा लिया। हर एक बच्चे के चहेरे पर खुशीकी झलक दीख रही थी। बच्चोंने अपने मित्रों के साथ दो प्रहर का भोजन किया।

भोजन के बाद सब बच्चे सभा मंडप में इकठ्ठा हुए। अहमदाबाद से आये मैत्रीय राजप्रियने वर्षा का गीत सुनाया पूरा बारीश का माहौल खड़ा कर दिया। वे अपने साथ पूरा म्युझिक सेट और संगीतकार लेके आये थे। बाद में श्री कृष्ण दवेने बच्चों के लिए लिखी अपनी कविताएँ सुनाईं। उनके एक गीत ''भोन्दुभाई का लेशन'' गीत पर श्री पारसभाई ने अभिनय किया बच्चोंने खूब मजा लिया। शिशुविहार की आपत्ति निवारण संस्थाने आपत्ति निवार कैसे किया जाए इसके बारेमें निर्देर्शन किया। 7–00 बजे नाश्ता करके बच्चे अपने घर पहुंचे ।

तीसरे दिन बच्चे सीधे मेला परिसर में इकट्ठे हुए। जहां प्रकृत्ति प्रार्थना करके बच्चे

पृष्ठ ३२ पर...

विशेष आलेख - 3

नाविक क्यों निराश होता है? अरे क्षितिज के पार साहसी नव प्रभात होता है!

१) नाविक क्यों निराश होता है ? अरे क्षितिज के पार साहसी नव प्रभात होता है :

रात्रि के बाद दिन आता है । दिन के बाद फिर रात्रि आती है । सफलता और असफलता, सुख और दुःख जीवन में धूप-छांव की तरह आते-जाते रहते हैं । प्रायः कुछ लोग नौकरी, कैरियर, व्यवसाय, परीक्षा आदि में असफल होने के बाद या जीवन की बाधाओं से घबराकर आत्महत्या जैसा गंभीर कदम भी उठा लेते हैं । वे मान लेते हैं कि दुनियाँ समाप्त हो गई है। हम शरीर का तो अंत कर सकते हैं लेकिन आत्मा को छू भी नहीं सकते । आत्मा अगर अमर है। मानव जीवन आत्मा के विकास के एक उच्च उद्देश्य के लिए मिला है। इसलिए हमें अपने जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य बनाना चाहिए । एक कर दे हृदय अपने सेवकों के हे प्रभु, निज महान उद्देश्य उन पर कर प्रगट हे प्रभु।

२) जब जब राम ने जन्म लिया तब तब पाया वनवास :

परमात्मा जब जब दया करके मानव शरीर में राम, कृष्ण, बुद्ध, ईशु, मोहम्मद, नानक, बहाउल्लाह आदि अवतारों के रूप में अवतरित हुआ तब हमने उन्हें वनवास, सूली, कारावास के अलावा तरह-तरह से कष्ट दिये। यह संसार एक पागलखाना है जब कोई आध्यात्मिक चिकित्सक अवतार या सन्देश वाहक के रूप में हमारा इलाज करने आते हैं तो हम अपने रक्षक को ही नहीं पहचानते और उन्हें अनेक प्रकार से कष्ट देते हैं । इसलिए कहा जाता है कि जब जब राम ने जन्म लिया तब तब पाया वनवास । यदि हम अपने महान अवतारों राम, कृष्ण, बुद्ध ईशु, मोहम्मद, नानक, बहाउल्लाह द्वारा प्रभु की राह में झेले गये भीषण कष्टों को याद करेंगे तो हमें अपने जीवन में आने वाले कष्ट बहुत छोटे प्रतीत होंगे। हमें अपने अवतारों के संघर्षपूर्ण जीवन से बाधाओं से लड़ने की अपार शक्ति अंदर से प्राप्त होगी ।

३) उत्साह सबसे बड़ी शक्ति तथा निराशा सबसे बड़ी कमजोरी है :

जीवन में उत्साह सबसे बड़ी शक्ति है तथा निराशा सबसे बड़ी कमजोरी है । इसलिए सफल व्यक्ति के जीवन में हम सबसे बड़ा गुण यह पाते हैं कि वे जीवन की हर परिस्थिति में सदैव उत्साह से भरे रहते हैं । संसार के हर व्यक्ति में अपनी रूचि के क्षेत्र में प्रथम आने की मौलिक क्षमतायें, विचार तथा सामर्थ होती है। संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो बिना असफलता के आगे बढ़ा हो । सफलता का मार्ग असफलता से होकर

जाता है। इतिहास गवाह है कि बड़ी असफलताओं के बाद दुनियाँ में कई महापुरुष तथा सफलतम वैज्ञानिक हुए हैं, जिनके जीवन मूल्य, आविष्कार और तकनीक आज नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं ।

४) सफलता प्राप्त करने के साधन भी सही होने चाहिए :

महात्मा गांधी स्कूली पढ़ाई के दौरान थर्ड डिवीजन में उत्तीर्ण होते थे । बालक मोहन को उनके शिक्षक ने आगे बैठे बालक की नकल करने के लिए प्रेरित किया लेकिन उन्होंने गलत तरीके का सहारा नहीं लिया । सत्य, अहिंसा तथा सादगी की राह उन्होंने चुनी। इस राह पर वह जीवन पर्यन्त दृढ़तापूर्वक चलते रहे। अहिंसा के बूते देश को गुलामी से मुक्त कराने की मिसाल उन्होंने दुनिया के समक्ष रखी। अथक प्रयास एवं ईश्वर पर भरोसे के बलबूते वह संसार के सबसे सफल व्यक्ति बनकर सदा के लिए अमर हो गये। आज पूरा विश्व उनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाता है।

५) प्रफुल्ल चंद्र राय को पढ़ाई रास नहीं आती थी :

प्रफुल्ल चंद्र राय का जन्म 1861 में बांग्लादेश के खुलना जिले के रारूली कटीपाड़ा गांव में हुआ था। श्री राय बंगाली एकेडमिक में कैमिस्ट थे। इन्होंने कोई इंजीनियरिंग की डिग्री नहीं ली। बचपन से ही ये पढ़ाई से दूर भागते थे। घरवालों के दबाव के बाद भी इनका पढ़ने में मन बहुत कम ही लगा। कभी-कभार ही स्कूल जाते थे। पढ़ने में ये औसत छात्र थे। हालाकि बाद में इन्होंने कोलकाता यूनिवर्सिटी से बीएससी और एमएससी की डिग्री ली और आंतरराष्ट्रीय स्तर भौतिकी के वैज्ञानिक हुए । इन्हें भौतिकी जगत में सम्मान के साथ याद किया जाता है।

६) रामानुजन १२ वीं कक्षा में लगातार दो बार फेल हुए थे :

तमिलनाडु के इरोड में जन्में रामानुजन को दस वर्ष की उम्र में ही औपचारिक गणित का सामना करना पड़ा। वे लगातार दो साल 12 वीं में फेल हुए। लेकिन, वे निराश नहीं हुए। चूंकि गणित उनको अच्छा लगता था। इसलिए वे इसमें रम गए। गणित से अत्यधिक प्रेम के कारण वे दूसरे विषयों पर बहुत कम समय दे पाते थे। परिणाम हुआ कि कई विषयों में वे असफल होते रहे। हालांकि उन्होंने 12 साल की उम्र में प्रमेय की खोज में महारत हासिल की। उन्हें कैंब्रिज से फेलो ऑफ रॉयल सोसायटी मिला। इसके बाद वे अपने पसंदीदा विषयों के साथ आगे बढ़े।

७) जे.आर.डी.टाटा का जीवन के प्रति प्रेरणादायी दृष्टिकोण :

यदि हमारी उचित इच्छा पूरी न हो तो यदि हम उससे ऊपर उठते हैं तो प्रकृति हमें इतना देती है जो कदाचित इच्छा पूरी होने पर नहीं मिलता। जे.आर.डी.टाटा के कोई संतान नहीं थी पर उन्होंने अपने कर्मचारियों को इतना स्नेह दिया कि सभी उनको पितातुल्य मानते थे। इस प्रक्रिया में टाटा समूह न केवल विकसित हुआ बल्कि महान भी

बना।

८) अब्राहम लिंकन बार-बार की असफलता से निराश नहीं हुए :

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन 32 बार अपने चुनावी अभियान में असफल हुए थे । हर असफलता उन्हें और जोरदार तरीके से प्रयास करने के लिए उत्साहित करती थी । इस प्रकार वह 33 वीं बार में राष्ट्रपति पद के लिए सफल हुए और दासों के मुक्तिदाता के रूप में अमेरिका के लोकप्रिय राष्ट्रपति बने ।

९) चर्चिल स्कूली जीवन की किसी परीक्षा में सफल नहीं हुए :

इंग्लैण्ड के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल अपने स्कूली जीवन की कोई परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सके थे। विंस्टन चर्चिल इन असफलताओं से कभी भी निराश नहीं हुए और बाद में वह इंग्लैण्ड के लोकप्रिय प्रधानमंत्री बने । चर्चिल को यदि बीसवीं शताब्दी का विलक्षण बहुमुखी व्यक्तित्व कहा जाए, तो अतिशयोक्ति न होगी ।

१०) आईस्टीन को कई बार मिली जीवन में असफलता :

जर्मन वैज्ञानिक अल्बर्ट आईस्टीन को गणित के अलावा कुछ नहीं आता था। इसलिए ये डिप्लोमा भी नहीं कर सके। काफी दिनों के बाद उन्होंने पैटेंट ऑफिस में क्लर्क की नौकरी शुरू की। वहीं से वे अपना रिचर्स पेपर प्रकाशित करते थे। कहा जाता है कि अपने जीवन की शुरूआत में वे बहुत असफल व्यक्ति थे। प्रारम्भिक जीवन में कई बार उन्हें असफलता का स्वाद चखना पड़ा। लेकिन उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी। और जो करने की ठानी, उसे पूरा करके ही दम लिया। 1929 में फोटो इलेक्ट्रिक इफेक्ट के कारण इन्हें नोबेल पुरस्कार भी मिला।

११) एडीसन ने अनेक बार असफल होने के बावजूद भी हार नहीं मानी :

एडीसन ने सिर्फ 14 साल की उम्र तक प्राथमिक शिक्षा ली थी। आगे की पढ़ाई वह बिल्कुल नहीं कर पाये। लेकिन, उनके हौसले सदैव बुलंद रहे। शायद इसी का परिणाम रहा कि थॉमस एडीसन ने बल्ब का आविष्कार किया। बल्ब बनाते समय भी इन्हें 10,000 बार असफलता मिली। लेकिन, ये अपनी धुन में रमे रहे। आज के छात्र थॉमस अल्वा एडीसन से सीख ले सकते हैं कि फेल होना जीवन का अंत नहीं है, बल्कि एक नए लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा की ओर शुरूआत है।

१२) कर कर्म इतना ऊँचा कि बुलंदियों को छू लें :

सच्ची लगन ही सफलता की सीढ़ी है। हमें अपना हुनर मालूम है। जिस तरफ चल पड़े रास्ता बनता जायेगा। हम अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल मगर, लोग आते गये और कारवां बनता गया। नजर-नजर में उतरना कोई कमाल नहीं, नफस-नफस में उतरना कमाल होता है । अगर हम अपनी आँखों से स्वयं विजेता हैं तो इससे बड़ी कोई कमाल नहीं, बुलन्दियों पर ठहरना कमाल होता है। अगर हम अपनी आँखो से स्वयं विजेता हैं तो इससे बड़ी कोई उपलब्धि नहीं है। विश्व हमारे विचार तथा कार्य को कितना महत्त्व देता है यह

मायने नहीं रखता। हर कोई यह सोचता है कि मैं संसार को बदल दूँगा पर यह कोई नहीं सोचता है कि मैं स्वयं को बदल लूँ।

१३) जीवन को उत्साहित करने वाले कुछ शक्तिदायी विचार

इम्तहानों से न हरगिज मुँह चुराना चाहिए । बल्कि ऐसे में स्वयं को आजमाना चाहिए। बाँसुरी की जिन्दगी से सीख ले, ऐ जिन्दगी! जख्म सीने में भले हों, गुनगुनाना चाहिए। नया इतिहास स्वर्णिम जो लिखे पसीने से, उसी का नाम जीवन है, वही केवल सफलता है। चूमेंगी सफलताएँ पग-पग, श्रम ही सफलता का मन्त्र मान लीजिए। कार्य कोई भी नहीं कठिन है आपके लिए, एक बार मन में जो ठान लीजिए। साहस की पूंजी कभी चुकने न देना मित्रों! होती रहे चाहे संकटों की बरसात है। सुख का रतन लिए सूरज उगेगा कल आज माना जिन्दगी में काली-घनी रात है। उजाले को सुबूतों की कहाँ दरकार होती है, ये दुनियाँ जान लेती है जहाँ सूरज निकलता है। आईये, हम अपने प्रत्येक कार्य को ही रोजना परमात्मा की सुन्दर प्रार्थना बनाये।

-डॉ.जगदीश गांधी, शिक्षाविद् एवं
संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

काव्य भारती

क्षणिकाएँ

दृष्टिकोण

नहीं है सुरक्षित यहाँ
बचपन
या यौवन
या जीवन
या अपनापन
क्यों कि इन्हें लगा है ग्रहण
बीतने का
या लुटने का
या बुझने का
या परायेपन का
कारण ढूँढ़ों तो मिलता है
उम्र के बढ़ने का
या नियत में खोट आने का
या असुरक्षित होने का
या मानवता के मिटने का ।

अशिष्टता

जबसे मर्यादा ने
खाया जनाधार,
इज्ज़त देने की
शिष्टताका हुआ
बँटा ढ़ार ।

समय

समय होता
कितना
बलवान,
कालिदास जैसे
को बना
दिया महान

अंगद

देश में भ्रष्टाचार के
जमते पांव
को देखता होगा,
तो मृत्यु लोक
में भी
अंगद
शर्मिन्दा होता
होगा ।

डा.ललित फरक्या
''पार्थ'' ''श्रद्धाश्रय''14-गोविन्द नगर,
दशपुर मन्दसौर-458001 (म.प्र.)

कथामाला अधिवेशन

अहवाल

''बलसागर भारत होवो, विश्वात शोभूनी राहो...''

पुज्य साने गुरुजी का यह ध्येय और मन का विश्वास लोगों में जो एक दूसरे के प्रति घृणा है उसे नष्ट करते हुए, तथा धर्म, जाति, लिंग, भाषा इस प्रकार की कोई भी बाधा न आते हुए सभी लोगों में बंधुत्त्व का नाता जुडे यह आंतरभारती का सपना दिल में लिए अपने साहित्य के माध्यम से संघर्ष कर रहे थे ।

''करील रंजन मुलांचे जडेल नाते प्रभुशी तयाचे...''

अर्थात जो बच्चों का मनोरंजन करेगा, उसका सीधा ईश्वर से नाता जुड़ेगा। कथाकथन से, गीतगायन और खेल के माध्यम से संस्कार दे सकते हैं । इस बात पर गुरुजी का पूरा विश्वास था। मीठी-मीठी कथाओं को कहते हुए गुरुजी के देहांत के पश्चात गुरुजी का प्रिय और मेहनत करनेवाला बालक 'प्रकाशभाई मोहाड़ीकर ने गुरुजी का चलता-फिरता स्मारक अ.भा.सानेगुरुजी कथामाला के रूप में जागृत रखा।

इस कथामाला का राष्ट्रीय-48 वां अधिवेशन-14, 15 फरवरी 2015 को यशवंत कला महाविद्यालय मैदान, गारखेडा, औरंगाबाद में संपन्न हुआ।

अ.भा.सानेगुरुजी कथामाला के अध्यक्ष मा.नानासाहेब जयवंतराव ठाकरे जी अधिवेशन के अध्यक्ष तथा मा.श्री दिनकर बोरीकर जी स्वागताध्यक्ष थे ।

अधिवेशन के पूर्व महाराष्ट्र के विभिन्न स्कूलों में मंगलयात्रा का आयोजन कर उसमें छात्रों को कथा, गीत, कृतियुक्त गीतों के माध्यम से मनोरंजन तथा प्रबोधन किया गया और मंगलवाड़मय का वितरण किया गया।

अधिवेशन में राष्ट्रध्वज और साने गुरुजी कथामाला ध्वज का ध्वजारोहण मुख्य अतिथि मा.डॉ.एस्.एम.सुब्बाराव (भाईजी) के शुभ हाथों से किया गया।'

अधिवेशन का प्रारंभ ध्वजारोहण से हुआ। उसके बाद पूरे शहर से विभिन्न स्कूल के लगभग 300 छात्रों ने 'एक सुर एक ताल' यह कृतियुक्त गीत का प्रस्तुतीकरण किया। इस कार्यक्रम का संयोजन श्री सोमनाथ परब जी, श्री दुर्गेश गोसावी, रवींद्र खैरनार, राजन पवार, योगेश निकुंभ, राकेश खैरनार आदि लोगों ने किया।

अधिवेशन के दो दिनों में कई प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उनमें 'प्रकाशभाई मोहाडीकर जी के चित्रों का प्रस्तुतीकरण श्री नागरे, मुंबई इन्होंने किया और शिल्पकार सुनिल देवरे ने ज्येष्ठ कार्यकर्ता श्री दुदलीकर जी का व्यक्ति शिल्प का अविष्कार किया।'

मा.एस.एन.सुब्बाराव भाईजी और अन्य मान्यवरों की उपस्थिति में उद्घाटन

समारोह संपन्न हुआ। इसमें आदर्श कथामाला शाखा पुरस्कार, आदर्श कथानिवेदक पुरस्कार का वितरण किया गया। अधिवेशन स्मरणिका का भी प्रकाशन तथा डॉ.अनिल गोडबोले लिखित 'गोष्टी सांगणाऱ्याची गोष्ट' पुस्तक का प्रकाशन किया गया।

दोपहर सत्र में -'शिक्षणाच्या जीवघेण्या स्पर्धेत मुला-मुलींचे हरवलेले बालपण' इस विषयपर परिसंवाद हुआ। इसमें डॉ.विश्वास पाटील, आजमखान इन्होंने अपने विचार व्यक्त किए। परिसंवाद का सूत्रसंचालन श्री अविनाश सोनार ने किया दि. 14 फरवरी 2015 को छात्रोंने बहारदार कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसमें मा.सुब्ब रावजी दिग्दर्शित 'भारत की संतान' यह राष्ट्रीय एकात्मता पर आधारित कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण किया।

दि. 15 फेब्रु. सुबह कथामाला के पदाधिकारी और आमंत्रित अतिथि मा.सुब्बारावजी के शुभ हस्ते ध्वजारोहण उसके बाद औरंगाबाद शहर से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। उसमें सभी शिक्षक और छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इस शोभायात्रा से मनोरंजन और समाजप्रबोधन किया गया।

उसके बाद मा.डॉ.सुब्बरावजी की उपस्थिति में बालआनंद महोत्सवका समापन किया गया।

पृष्ठ २६ से...

स्टॉल्समें प्रवृत्ति के लिए गए । स्थानीय संस्थाओं के विद्यार्थी, शिक्षक और राजनेतागण मेले की मुलाकात के लिए पधारकर प्रोत्साहित किया। दो प्रहर खेल हुए और समापन समारंभ का कार्यक्रम नजदीक आ गया। समारंभ में स्वरूपसंपत (भूतपूर्व मि.इन्डिया) पधारी थीं। जिन्होंने बच्चों के अनुभव सुने। उन्होंने कहा कि आप को विश्वग्राम के नाम एक खत लिखना है। जिसमें आप के अनुभव बताना है और आपके विस्तारमें एक बालमेला करना है।

मेले को सफल बनाने के लिए भावनगर के स्थानीय संस्था और मित्रोंने आर्थिक सहयोग दिया बच्चों का आनेजाने का खर्च बच्चोंने स्वयं उठाया।

ये मेले की खास विशेषता ये रही कि 45 स्टॉल लगे, शिक्षकों को भी परिवारोंमे रखा गया, और मेले की पूरी व्यवस्था इतने अच्छे ढंग से की गई कि निर्धारित समयमें सब कार्यक्रम अच्छी तरह से संपन्न हुए। परस्पर भाईचारा इतना बढ़ा ये तो समय ही बताएगा। यह एक मॉडेल बालमेला था। जिसकी एक डोक्युमेन्टरी भी बनाई गई है। जो भावि कार्यक्रम के लिए काममें आयेगी। अगले साल ऐसा ही एक बालमेला करने का संकल्प लिया गया। जिसमें भारत के विभिन्न प्रांतों से भी बच्चों को बुलाया जाएगा।

आभार

हर्षद रावल
मो.8141973341
e-mail : harshadraval70@gmail.com

शहीद भगतसिंह अमर रहें!

''अगर आप सोचते हैं कि जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ पैसा है, अगर आप एक धर्म के हैं इसलिए दुसरे धर्म के लोगों से नफरत करने में विश्वास रखते हैं औ आप भारत के अतीत और वर्तमान को आलोचनात्मक नज़रिए से देखने के लिए तैयार नहीं है, तो आप किसी दूसरे आदर्श की तलाश करें । मैं आप के लिए नहीं हूँ ।''

–शहीद भगत सिंह

शहीद भगत सिंह भारत के एक ऐसे सुपुत्र थे जिन्होंने देश के लिए केवल बलिदान ही नहीं दिया अपितु देश के करोडों गरीबों के सामाजिक, अर्थ्थिक व राजनीतिक उद्धार के लिए विचार भी दिये । इन विचारों की समाज को आज भी जरुरत है। इसीलिए जनमुक्ति संघर्ष वाहिनी तथा समविचारी व्यक्ति शहीद भगत सिंह के विचार समाज तक पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को हुआ और 23 मार्च 1931 को उन्हें, उनकी सहयोगी राजगुरु और सुखदेव के साथ फांसी के फंदे पर चढ़ा दिया गया । उस समय उनकी उम्र 24 वर्ष से भी कम थी । इसलिए लोगों की समझ बन सकती है कि यह युवा बम व पिस्तौल लेकर अंग्रेजों को ललकार रहा था जो गलत है । भगत सिंह का हिंसा पर विश्वास नहीं था। वे कहा करते थे, ''मैं आतंकवादी नहीं हूँ और कभी था भी नहीं, शायद उन कुछ दिनों को छोड़कर जब मैं अपने क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत कर रहा था। मुझे विश्वास है की, हम ऐसे तरीकों से कुछ भी हासिल नहीं कर सकते । इसलिए क्रांतिकारी निरर्थक आतंकवाद और व्यक्तिगत आत्मबलिदान के दुष्टचक्र में न फंसे ।''

तो फिर भगत सिंह को कौनसी क्रांति करनी थी ? वे कहते हैं, ''हम गोरी बुराई की जगह काली बुराई को लाने का कष्ट उठाना नहीं चाहते । भारत में साम्राज्य व्यवस्था शोषण पर आधारित है। भारतीय श्रमिकों को साम्राज्यवाद को और इसके समर्थकों को हटाकर आगे आना है।''

भगत सिंह को श्रमिकों को न्याय देनेवाली क्रांति, सभी क्रांति, सभी श्रमिक वर्गोंको धर्म, वंश, जात प्रांत इन भेदों से ऊपर उठाकर साथ में लाकर करनी थी । श्रमिकों को वे कहते हैं, ''... इसी में आप की भलाई है की आप धर्म, वंश, वर्ण व राष्ट्रीयता आदि भेदभाव भूलकर एक हों और सरकार की ताकत हाथ में लेने की कोशीश करें । ''

देश कि प्रगति में बाधा लाने वाले धार्मिक अंधविश्वास एवं कट्टरता इनसे समाज को छुटकारा कर लेना चाहिए ऐसा कहते हुए भगत सिंह लिखते हैं, ''एक धर्म के अनुयायी दुसरे धर्म ले अनुयायीओं के कट्टर दुश्मन हैं । अब तो एका धर्म का होना ही दुसरे धर्म का कट्टर शत्रू होना है। हम भारतवासी क्या कर रहे हैं? पीपल की एक डाल टुटते ही हिन्दुओं की धार्मिक भावना चोटिल हो उठती है, मूर्तिओं को तोडनेवाले मुसलमानों पर ताजिया का कोना फटते ही अल्लाह का प्रकोप जाग उठता है। और फिर वह नापाक हिन्दुओं के खून से कम किसी वस्तु से संतुष्ट नहीं होता । मनुष्य को पशुओं से अधिक महत्त्व दिया जाता है। लेकिन यहाँ भारत में पवित्र पशुओं के नाम से एक दुसरों का सर फोडते हैं । ''

आज जिस सेक्युलॅरिझमल को जानबुझकर बदनाम किया जाता है उसी का पुरस्कार करते हुए भगतसिंह ने कहा है, ''इस समय कुछ भारतीय नेता भी मैदान में उतरे हैं, जो धर्म को राजनीति से अलग करना चाहते हैं, झगडा मिटाने का यह भी एक सुन्दर इलाज है, और हम इस का समर्थन करते हैं । यदि धर्म को अलग कर दिया जाए तो राजनीति पर हम सब इकट्ठे हो सकते हैं। हमारा ख्याल है की भारत के सच्चे हमदर्द हमारे बनाए इलाज पर जरूर विचार करेंगे और भारत को आत्मघात से बचा लेंगे ।''

अस्पृश्य और आदिवासी बंधुओं के बारे में भगत सिंह करूणा से ओतप्रोत थे और उनके उत्थानार्थ उन्होंने क्रांति की मशाल हाथ में ली थी तथा अंतिम सांस तक प्रज्वलित रखीं! क्योंकि उनका देशप्रेम मात्र भावनावेग नहीं था। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समता के लिए वह प्रतिबद्ध थे फांसी की कोठरी से उन्होंने अपने सहयोगीओं को लिखा था, ''आज फांसी की, इस कोठरी में बैठकर मैं करोड़ों देशवासियों के कंठों से उठते हुए इन्कलाब झिन्दाबाद की हुंकर सुन रहा हँ ।`रा यह नारा स्वाधीनता संग्राम की चालक शक्ती के रूप में साम्राज्यवादिओं के ऊपर अंत तक प्रहार करता रहेगा।... और इतनी छोटी जिन्दगी का इस से अधिक मूल्य हो भी क्या सकता है?''

भगत सिंह के विचारों को लोगों तक पहुँचाना और उन्हें अभिप्रेत भारत का निर्माण करना यहीं उन्हें वास्तविक श्रद्धांजली होगी । हमारे इन प्रयत्नों में आप भी शामिल हों ।

जन मुक्ति संघर्ष वाहिनी

आंतर भारती दिवस

(पंढरपुर सत्याग्रह एवं यदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह)

१० मई २०१५

इसबार आसाम में, विशेष आयोजन

आयोजक

श्री हरीश भट्ट

कोकिला विकास आश्रम

ग्रा.पो.सोनापुर वाया–गोहपुर – ७८४१६८

जि.सोनीतपुर (आसाम)

harishbhatt132@gmail.com

Mo.09435563879/09435183391

मार्च में आरक्षण करवा लें । देश के किसी भी स्थान से 'हावडा ब्रिज/सिलीगुडी/जलपाईगुडी स्टेशन पहुँचे ।

दार्जिलिंग देखना हो तो दिनभर लगेगा। दिन में दार्जिलिंग देखकर रात में जलपाईगुडी/सिलीगुडी आकर वहाँ से गुवहाटी–गोहपुर के लिए रेल में बैठें गोहपुर से सोनपुर आयोजक आपको ले जाएंगे, इस तरह 10 की प्रातः तक सोनपुर पहुँचना है। इसी निमित्त उत्तर पूर्वी भारत देखने 7 दिन अतिरिक्त देकर प्रवास, निवास, भोजन खर्च के लिए रू. 7000 लगेंगे, गोहपुर तक का तथा वापसी का रेल खर्च स्वयं करना होगा । केवल 40 लोगों की व्यवस्था हो सकेगी उ.पू. भारत दर्शन के लिए अतः तुरंत रू. 7000/– भेजकर आरक्षण करवाएं ।

11 मई से उत्तर पूर्वी प्रदेश की यात्रा प्रारंभ होगी सोनापुर से इटानगर से अरूणाचल से फिर सोनापुर से दीमापुर से काजीरंगा से माजुली बेट से दीमापुर से इंफाल से मणिपुर दर्शन से शिलांग (मेघालय) से गुवाहाटी 17 मई को देखकर अपने घर के लिए वापसी (गुवाहाटी से)। पैसे भरें (रू. 7000/–)

यात्रा संयोजक : हर्षदभाई रावल **08141973341**

e-mail : harshadraval70@gmail.com

हर्षदकुमार वासुदेव रावल, एस.बी.आय. रानिप (अहमदाबाद)

A/C. No. 30230807451 IFSC SBIN 0007476